Manaswini

A quarterly E-Magazine

आजादी के नायक

One Last Time...

सोशल मीडिया और बदलती ज़िंदगी...

Beyond the Clouds

SVVV Literary Club

MANAS

Express Yourself...

SHRI VAISHNAV VIDYAPEETH VISHWAVIDYALAYA

INDORE

About the Club

Manas – The Literary club of Shri Vaishnav Vidyapeeth Vishwavidyalaya, officially started in the year 2016, takes its origin with an ambition to nurture the literary sprouts of the young budding talents amid technology and science. This provides the students with a suitable platform to outpour their innermost thoughts and powerful feelings in the form of poetry, debate, extempore and creative writings to name a few.

Within a few years of its foundation, the Club has been instrumental in building a community of creative, imaginative and thoughtful human beings and has introduced many events for the students.

From time to time, the Club organizes rich and diverse array of literary activities such as debates, declamations, group discussions, poetry writing and recitation, story writing, slogan writing, etc. Through these activities, literary coordinators reach out to the students and try to create a space for sharing thoughts and emotions.

The Club MANAS wants to stand firm on the grounds of discipline and well-being of everyone associated with this club in any manner.

Objectives

- To develop self-efficacy and confidence which would help to enhance and sharpen the skills of creative and logical thinking in students.
- To cultivate a passion for reading, writing and speaking among the students.
- To make students learn to analyse issues and come up with solutions.
- To develop organization skills and persuasive skills among students.

From the Desk of Coordinator

Manaswini

They turned up with an idea, they brought the apparatus with them and they made it for us. And here they refer the members of Manas, the idea was E-magazine, the apparatus was their words, creativity, and their imagination, and what came out was named as Manaswini by them. Manaswini meaning sensible - the name truly represents the motto of Manas – The Literary Club to present the sensible content to its readers. Initiated by the members of Manas – The Literary Club, Manaswini is an expression of the students of Shri Vaishnav Vidyapeeth Vishwavidyalaya, Indore.

The thoughts behind the E-magazine are to utilize the technology to maintain the environment and to make it easily approachable to the maximum readers. Manaswini E-magazine is a platform for all writers to exhibit literary skills and innovative ideas in the form of articles, poetry, stories, drama, etc. The enthusiastic and hardworking members of the club have given their time and toil to shape this E-magazine.

We are proud and exuberant to bring out the first issue of Manaswini and we hope that the enthusiastic write-ups of students are indubitably sufficient to hold the interest and admiration of the readers.

Dr. Suchita Mishra

Coordinator, Manas

संपादकीय

"आसान नहीं होता, कलम से सच्चे हालात लिख देना।
यूँ शब्दों को हथियार बनाना, कोई मामूली बात नहीं।।"

लेखक एक कमान है और उनकी क़लम एक तीर जो बिना कुछ कहे ही सबकुछ कह जाता है। लोगों के जज़्बातों को अपने ख़यालों की स्याही से लिख देना ही उनकी प्रतिभा है। पन्ने पर हर जज़्बात का एक नया रंग और रूप दिखाना ही उनकी कला है। एक रचयिता की क़लम बिना शोर मचाए बहुत कुछ कह जाती है। प्रवर्तक के विचार बहती हुई नदी के समान है जो कभी थमते नहीं है। रचनाकार के पास ईश्वर की एक अलौकिक शक्ति होती है जिससे वह सामान्य से दिखने वाला शब्दों में भी सौंदर्य उत्पन्न कर भाव प्रकट कर देता है। वह क़लम के ज़रिए शब्दों के बहाव का रूख बदल कर उन्हें एक नये मुकाम तक पहुंचाता है। अपने विचारों और जज़्बातों को लोगों के सामने एक सलीक़े से पेश करना ही एक सुलेखक को आम इंसान से अलग करती है। लेखक उन विचारों और जज़्बातों पर प्रकाश डालता है जहाँ सिर्फ़ अंधकार होता है। वह पूरे वर्ग/देश के विचारों को चंद शब्दों में बयां कर सम्पूर्ण जगत को उससे अवगत कराता है। उसके शब्द वह तीर है जो लोगों के दिल और दिमाग़ को छू जाते है। एक क़लम के सहारे रचयिता एक व्यक्ति को उन लिखे शब्दों के जज़्बातों से जोड़ने की ताक़त रखता है। पहले के युग में एक अनुभवी इंसान ही विचारों को पन्नो पे व्यक्त कर पाता था मगर आज के इस आधुनिक युग में युवा पीढ़ी भी अपने विचारों को बहुत ही सक्षम तरीक़े से व्यक्त कर पा रही है। इसे सोशल मीडिया का प्रभाव कहे या बढ़ती आधुनिकता का असर, किन्तु बढ़ते संचार के माध्यम से युवा पीढ़ी अपने विचारों को नए नए सलीके से आज समाज के सामने व्यक्त कर रही है। आधुनिक शैली जिस रफ्तार से बदल रही है, आजकल की युवा पीढ़ी भी उसी के अनूरूप खुद को बदल कर नई नई जीवनशैली अपना रही है। इसी का परिणाम है कि नई पीढ़ी लेखन के क्षेत्र में अपनी आजीविका तलाश रही है एवं इसी के बल बूते खुद को आज की समाज में सक्षम कर पा रही है।

आजादी के नायक

आजादी की खातिर अपना पल पल देश को सौंप दिया,
दुश्मन की पीठ पे वार नही, सीधे सीने मे खंजर घौंप दिया,
ऐसे लोगों की कुर्बानी का मेरा रोम रोम कर्ज़दार है,
वो वीर पुत्र ही इस भारत का असली हक़्दार है।।

बचपन में ही इन वीरों ने खेल मौत से खेला था,
अपनी दृढ़शक्ती से दुश्मन को सीमा पार धकेला था,
ऐसे वीर सपूतों का करता हर कोई यहाँ गुणगान है,
आखिर ऐसे ही थोड़ी ना मेरा देश महान है।।

कुछ 20 बरस की उमर में ही उन अंग्रेजों से लड़ गये,
अंग्रेज़ी सेना के आगे सीना ताने वो अड़ गये,
ऐसे देश प्रेमियो का दिल करता मेरा सत्कार है,
इनका लहू ही तो यारों आजादी का आधार है।।

अभी जवाँ भी हुए नही थे बन्दूकें भी तान ली,
आजादी की खातिर इन्होने साँस साँस कुरबान की,
एसे स्वयंसेवियों को बारम्बार प्रणाम है,
हर पल इन वीरो को करता मेरा देश सलाम है।।

इक तिरंगे की खातिर फांसी पर हस कर झूल गये,
ऐसे वीरों को यारों तुम ऐसे कैसे भूल गये,
माँ भारती के बेटों का आज करते हम सम्मान है,
सब मिल बोलो साथ मेरे की मेरा देश महान है।।

मजहब जिनका एक ही था, सिर्फ देश से प्यार वो करते थे,
वो गीता और कुरान की बातों पे ही जिया करते थे,
भूल जाओ तुम भी अब यारों कौन हिन्दू कौन मुसलमान है,
हम सब हिन्दुस्तानी है और देश ये हिन्दुस्तान है।।

-मधुर बिहानी

B.Tech. (M.E.) IV Year

हिंदी

हिन्दी भावना हैं, पूजा हैं, शक्ति है
ये हर भारतीय की अभिव्यक्ति है
ये प्रेम हैं , करुणा का सागर है
इसके हर क्षेत्र में अपना अनुशासन है

हिन्दी लय हैं, राग है , अनुराग है
ये खुशियों से खिलता हुआ बाग है
हिन्दी सूर है , तुलसी है , मीरा है
भाषा के सागर का अनूठा हीरा है

पर अब हो गयी हिन्दी से दूरी है
कोई तो न बोले हिन्दी और कोई अधूरी है
हिन्दी को समझते सब छोटा है
बिना इसके भविष्य का सिक्का खोटा है

यूं तो हम पहनावे से हिन्दी दिखते है
पर हम तो हिन्दी भी अंग्रेजी में लिखते है
ऐसी कौन सी वजह इस मोड़ पर ले आयी
लगता हैं कि हम भाषा के बाज़ार में बिकते है

तो हिन्दी बोलो , हम हिंदुस्तानी है
कई कवि लेखको के जीवन की कहानी है
हिन्दू मुसलमाँ क्या , हम हिन्दी है
हम एक है, माँ भारती की बिंदी है

हिन्दी तू क्या अनुपम है
हर बात तेरी अब मानी
अ से अनपढ़ सीखे थे ,
और ज्ञ से बन गए ज्ञानी -

-समर्थ भावसार

B.Tech. (C.S.E.) II Year

सोशल मीडिया और बदलती ज़िंदगी...

अगर ये सोशल मीडिया बंद हो गया तो क्या होगा? ये सवाल हम सभी के मन में कभी ना कभी आता ही है क्योंकि रोज़ सुबह उठ के वॉट्सएप पर सुबह की राम राम ना करले तब तक वो गरमा गरम चाय भी गले के नीचे नहीं उतरती और जब तक इंस्टाग्राम पर बीस पच्चीस स्टोरीज पर टक टक ना करे तब तक तो दिन भी शुरू नहीं होता है, खाना खाया हो या नहीं पर चिंता थी रहती है कि फलाने को मेसेज नहीं किया तो बुरा मान जाएगा, आज इसका जन्मदिन है अच्छा सा फोटो डालना है और ना जाने क्या क्या । अब दिल पर पत्थर रख कर वॉट्सएप, इंस्टाग्राम बंद तो किया और खुद को महान समझने लगे पर दो ढाई घंटे बाद याद आया कि आज तो दोस्त का जन्मदिन है उसे संदेश भेजना था पर जैसे तैसे खुद को समझा कर ध्यान भटकाया, शाम तक वो स्टेटस पर बजते गाने ज़ुबान पर आ गए और उनके चित्र आंखों के सामने आ गए किन्तु क्या करते हथ तो बंधे थे । इसी बीच घर के नीचे कुछ दोस्तों की आवाज़ आयी और हम निकल चले यादों की सैर पर और सालों बाद बिन मोबाइल के यह यात्रा यादगार बन गई । जैसे जैसे शाम अंधेरे में तब्दील हो रही थी वैसे एक एहसास हो रहा था कि हम सोशल मीडिया के नशे से बच सकते हैं ।

पहले दिन 70% इंटरनेट डाटा बचा देख, अगले दिन आत्मा जैसे जल रही थी पर क्या करते फेसबुक भी बंद था और यूट्यूब से तो हमने नज़रे चुरा रखी थी किन्तु आधे दिन टक हमने सब्र रखा। टाइमपास करने के लिए मोबाइल के फोटो देखने शुरू किए और दोस्तो द्वारा भेजे गए कई मीम देख सोशल मीडिया पर वापिस आने का में बहुत हुआ पर आ ना सके । अगले दिन कॉलेज पहुंचे तो पता चला कि आज कोई क्लास है ही नहीं और इसकी सूचना वॉट्सएप पर भेजी गई थी पर हमने तो वॉट्सएप बंद किया था ना । ये बात पता चली ही थी कि सूचना प्राप्त हुई के हमें सभी विषय के नोट्स वॉट्सएप पर प्राप्त होंगे । इसे सुन के एक बात ध्यान आयी की ना जाने कितनी सूचनाएं हमें सोशल मीडिया के माध्यम से मिल रही है और हमें जागरूक रहने के लिए जरूरी है किन्तु इन्हीं सूचनाओं का अधिक मात्रा में मिलना हमारे लिए हानिकारक है और अत्यधिक सूचनाएं हमारे दिमाग पर नकारात्मक प्रभाव डालती है जो तनाव का मुख्य कारण है । सोशल मीडिया शायद समुद्र मंथन का वह नाग है जिसके मुख से विश्व और अमृत दोनों निकलता है, हमें बस यह फैसला लेना है कि हम इसे अमृत की तरह ग्रहण करें या विश की तरह.....।

-जतिन लालवानी

BAJMC II Year

मैं रात हूँ

मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी
ये ख्वाहिशें ही है
जो मुझे ज़िंदगी से बांधती
शब्द हैं गीत, कलम है मेरी राग सी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी

बारिश के शोर में मिलता मुझे सुकून सा
बशर की भीड़ में क्यों आती ऐसी बाढ़ सी
जैसे सब गुन-गुना रहे हों धुन रंज सी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी

शुरुआत में ही क्यों लगे ये बेबसी
अभी ना ठहरो सैर करनी है अर्श की
अंधेरे में तुम्हे बनके मिलू मैं चाँदनी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी

तुम दुख बनो, बन जाऊं मैं मुस्कान सी
काँटा बनो तुम खिल जाऊं मैं गुलाब सी
नफरत बनो तुम बन जाऊगी मैं आशिकी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी

भूल जाऊं कभी मैं पल भर की बात भी
आये याद कभी बर्षों पहले की सौगात भी
कभी खुद में ही कैद तो कभी उड़ जाऊं मैं आज़ाद सी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी

कभी भय में लिपटी मैं, कभी बनू मैं साहसी
कभी शांत हूँ मैं जल सी, कभी बनू मैं आग सी
कभी खुश हूँ तो कभी हो जाती मैं मलाल सी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी
मैं रात हूँ, बातें मेरी चाँद सी

- साक्षी जैन

B.Sc. I Year

शहर

छत के ऊपर तारों के नीचे मच्छरों के साथ बिना डेंगू के डर के परिवार इकट्ठा सोया करता था,
अब बस बढ़ती बीएचके में घर के बटवारे होते हैं,
इसलिए मुझे डर है कि एक दिन हर जगह सिर्फ शहर होंगे।
अरे पहले दोस्त गली में दौड़े दौड़े आते ये प्लान पूरे मोहल्ले को सुनाते थे
अगर नखरे करते तुम तो तुम्हारे घर में घुस आते थे,
अब बस व्हाट्सएप पर फ्लॉप प्लान का डिस्कशन होता है
इसलिए मुझे डर है कि एक दिन हर जगह सिर्फ शहर होंगे।
पहले कड़ी धूप में मैदान की धूल मिट्टी में खेला करते थे,
हर गली में साल पत्थर के महारथी होया करते थे।
अरे पकड़ा पकड़ी में हम मुकेश भाई की छत से अब्दुल भाई की छत का फैसला ऐसे ही तय कर जाया करते थे
अब बस पीएसपी पर मल्टीप्लेयर खेल लेते हैं,
इसलिए मुझे डर है कि एक दिन हर जगह सिर्फ शहर होंगे।
पहले बिना टिकट के थिएटर में घुस जाया करते थे एक ही सीट पर हम दो-दो कर बैठ जाया करते थे
अब बस घर में बैठ के होम थिएटर वाले फील ले लिया करते हैं
इसलिए मुझे डर है कि एक दिन हर जगह सिर्फ शहर शहर होंगे।
सबसे ज्यादा डर इस बात का है कि मेरे यादों के बक्सों में न किसी से की गई बात नहीं मुलाकाते होंगे तो सिर्फ स्क्रीनशॉट्स
इसलिए मुझे डर है कि एक दिन हर जगह सिर्फ दिन हर जगह सिर्फ शहर होंगे।

-अलीफिया सफदरी

B.Tech. (C.S.E.) I Year

Hope

I had my gun ready, my mind ready, I closed all the doors, the doors that ever lead any thought, any hope, any dream, any memory, anything that can ever reach my mind, anything that can ever make me keep my gun down. As I was all ready to pull the trigger on, something took my hand down, I looked out of the window, I saw a kid at the other side of the road. Maybe he lived there in that thing which was too small to be called as a hut even. It just had some bricks that were just kept together to make a structure that can be called as a wall, for ceiling it had a shed. The kid was sitting at the entrance of this small structure, barely had any clothes on, but all the sand of Sahara on himself, and two rivers out of his nose, but he had something so beautiful.

He had all the happiness of the world in his eyes as he looked at those little pieces of potatoes on his plate, not even enough of food to satisfy that little creature's appetite. He had his happiness in his plate, in those some pieces. A smile full of satisfaction in merely some pieces of food, some dirty clothes and nothing at all to be called as comfort, a smile that had real happiness detached from anything that demands more, detached from anything that carried greed for better. That smile was enough for me to put my gun down, to let me open all the doors of hope, of dream, of a second chance. A face that had my inspiration and will to live. I smiled as looked at him and life smiled at me.

-Kalpashree Vyas

BAJMC I Year

One Last Time...

This is for the last time; I am awake half the night just to make sure every damn small thing is next to perfect.

This is for the last time; this rising sun is motivating me to be ahead of all in life's race while whole world is sleeping.

This is for the last time, I am so concerned about the polish of my shoes, shine of my beret, crease of my uniform, spark in my eyes and the will to be the best of my version.

This is for the last time; I am putting on my blue uniform with all my badges proudly on.

This is for the last time; I am given an opportunity to set an example for my juniors.

This is for the last time; I am shouting my throat out for bringing on the Josh into my cadets.

This is for the last time; I am going to march and create never dying memories with my not so bad friends but indeed a good family.

This is for the last time; I am witnessing this magnificent flag hosting while having goose bumps all over.

This is for the last time, I am so happy to have this frooti, pastry and samosa.

This is for the last time; I am going to be a part of this splendid parade.

FOR THE LAST TIME, I'll be called a cadet.

And it's time to get another prefix before my name i.e. EX-CADET. An incredible journey with lots of learning and betterments has come to a beautiful ending bringing a greater number of opportunities for proving my three years of training in real world, for bringing the best version out of me and for changing the colour of my uniform with a burning desire to serve the motherland.

Even though it is for the last time, I would be remarked as Cadet Under Officer. The pride of this strips will be eminent forever. I am proud of being a part of my fantastic crew who were always there showing true sense of unity and discipline. I bid all goodbye and after this life changing training I can say...

Although I will not be a cadet anymore, I would never be just a civilian.

~SIGNING OFF

CUO Simran Thakur

B.Tech. (E.C.) III Year

Acceptance

"Shiva" I heard my name again in a span of 15 minutes, while I kept arranging my dressing table. A heap of cosmetics, both used and expired, and unused kept arranged like the Saptarishi I always admired in the night sky. I was being called by my mother. She, in her very casual approach asked if I were interested to feed the birds out. I refused. I was shy to come out of my room, in front of people, even birds that wouldn't even have gossiped about me if they saw who I was.

"Who I was?" When I asked to my reflection in the mirror, I found goose bumps taking over my senses in a way that didn't make me panic, but I knew I were not normal, to make understand or to be understood.

My eyes wore winked eyeliner, but were also dark to let the world know that I haven't slept for days, thinking about how a little change I brought in my physic could hamper people around me. But I knew, Shiva also had Shakti with him. Shiva also has a feminine face to balance the qualities of both, the visible and latent, the light and dark, the hope and hopeless, the feminine qualities I had in my body could never diagnose as "one". I stepped out of the house, first time, as a female. I accepted the power of Shakti under the body of Shiva.

-Riddhi Wagle

B.A. II Year

Beyond the Clouds

Blowing air,
In despair,
Thunders are loud,
But something is there beyond clouds.
Loud thunders disturb a lot,
Need to focus upon what is plot,
Not easy to ignore mocking crowd,
But something is there beyond clouds.
Cold, grey weather is very desolating,
And the creepy noise is irritating,
Amidst the crowd should learn to fly,
In order to stand with clouds in the sky.
Looking behind the world is so easy,
But ahead it is uneasy,
Learn from nature to be so slim,
As it will teach to fill the cup above the brim.
More beyond the cloud is a dull life,
Neither love nor peaceful lives,
Of all what is here you must be proud,
So, keep your feet on earth and dream beyond the clouds.

-Jalad Shrimali

B.Tech. (C.S.E.) I Year

Office Bearers

Madhur Bihani
President

Abhijeet Shrivastava
Secretary

Komal Pal
Vice President

Simran Thakur
Treasurer

Aniket Jain
Publicist

Contributors

EDITORIAL BOARD

Mahak Verma
Chief Editor

Riddhi Wagle
Co-Editor

Aayushi Shrivastava
Member

Jatin Lalwani
Member

Samarth Bhawsar
Member

Lovelesh Gangil

Sakshi Jain

Alefiya Safdari

Kajal Changedia

Jalad Shrimali

Kalpashree Vyas

Design: Abhijeet Shrivastava
Concept: Madhur Bihani

Magazine Name : Lovelesh Gangil
Background Art: Kajal Changedia